ISSN : 2582-1792 (P)

IMPACT 2021 5.948 SJIF FACTOR

शोध समागम®

A DOUBLE-BLIND, PEER-REVIEWED QUARTERLY MULTI DISCIPLINARY AND BILINGUAL RESEARCH JOURNAL

आलोचना का लोकतंत्र

(उच्च शिक्षा में शोध, आलोचना के नवाचार)

दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार 13,14 फरवरी 2021

मा. श्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', केंद्रीय शिक्षा मंत्री से
प्रो. रामदेव भारद्वाज, कुलपति की भेंट

डी.एन्जा कॉलेज, कैलिफोर्निया
में हिन्दी सीखते ग्लोबल विद्यार्थी

प्रो. नीलू गुप्ता

डी एन्जा कॉलेज, कैलिफोर्निया
15 वर्षों से हिन्दी का वैश्विक प्रचार

Publisher
ADITI PUBLICATION
Raipur (C.G.) India

Special Issue for Webinar

आयोजक

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय,
डी एंजा कॉलेज, केलिफोर्निया (अमेरिका),
विश्व हिंदी ज्योति, केलिफोर्निया और केंद्रीय
हिंदी संस्थान आगरा के संयुक्त तत्वावधान में

&

SHODH SAMAGAM
A double - blind, peer-reviewed, quarterly,
Multidisciplinary and bilingual research journal

मुख्य संपादक - डॉ. शोभा अग्रवाल | विशेषांक संपादक- डॉ. संदीप अवस्थी

अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, डी एंजा कॉलेज कैलिफोर्निया, अमेरिका,
विश्व हिन्दी ज्योति, कैलिफोर्निया और केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा के संयुक्त तत्वावधान

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश) भारत

आयोजन समिति अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार

डॉ. सन्दीप अवस्थी
विशेषांक मुख्य–संयोजक
अध्यक्ष,
भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र,
पर्यटन और जनसंचार विभाग,
भारत

प्रोफेसर वीना शर्मा,
विशेषांक संयोजक
निदेशक,
केंद्रीय हिंदी संस्थान,
आगरा

प्रो नीलू गुप्ता,
विशेषांक संयोजक
विद्यालंकार, कैलिफोर्निया (अमेरिका)
की एंजा कॉलेज, कैलिफोर्निया
हिंदी शिक्षण की कक्षाएं (पन्द्रह वर्षों से)
भारत सरकार द्वारा विश्व हिंदी ...
उपमा ग्लोबल के माध्यम से साहित्य, ...
और संस्कृति की सेवा हेतु
'प्रवासी भारतीय सम्मान'21,
भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रदान।

विशेषांक संपादक
डॉ. सन्दीप अवस्थी
अध्यक्ष, भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र,
पर्यटन और जनसंचार विभाग, भारत

विशेषांक सह–संपादक
डॉ. प्रिया शर्मा,
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय
हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

विशेषांक सह–संपादक
डॉ. फरगाना,
सहायक प्रोफेसर एवं वार्डन
उर्दू विभाग,
एपेक्स विश्वविद्यालय,
जयपुर

विशेषांक सह–संपादक
डॉ. लता चन्दोला,
एसोसिएट प्रोफेसर एवं
विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा
विभाग, बैकुंठी देवी कन्या,
महाविद्यालय, आगरा

विशेषांक सह–संपादक
प्रो. जूही शुक्ला
एसोसिएट प्रोफेसर ...
अध्यक्ष चित्रकला विभाग
प्रयाग महिला विद्यापीठ
डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

ISSN : 2582-1792 (Print)

CONTENTS

SN.	Particular/Author name	P.N.
1.	पाश्चात्य वैचारिक प्रभुत्व की सोंझ और उगरती भारतीय वैचारिकी – अभारतीय राजनीतिक आलोचना का तटस्थ मूल्यांकन. डॉ. मनोज अवस्थी, सह–आचार्य, राजनीति शास्त्र, सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर	01
2.	सफनोंकी होम डिलिवरी के स्त्री पात्र : आधुनिक भारतीय स्त्री का प्रतीक अनीता कुमारी ठाकुर, शोधार्थी, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर बिहार प्रो. डॉ. श्री भगवान सिंह, शोध निदेशक, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर बिहार	06
3.	दलित विमर्श : आलोचनात्मक विश्लेषण डॉ. ऋतु माथुर, रिसोर्सपर्सन, सीएमएस, आईपीएस, इलाहाबाद विश्वविद्यालय	10
4.	आलोचना का लोकतंत्र और हम डॉ. संदीप अवस्थी, आलोचक, UGC नेट, डबल पीएचडी, मानद डीलिट. हिंदी अध्यक्ष, पर्यटन और जनसंचार विभाग, भारतीय विद्या अध्ययन केंद्र, भारत	15
5.	वर्तमान परिवेश में गुरु नानक देव की समग्र तथा व्यवहारिक दृष्टि डॉ. प्रिया शर्मा, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला	20
6.	सरल बैंक ऋण और युवा डॉ. अतुल कुमार मिश्र, Sanjivni Group of Educational Institute, Bahraich	26
7.	ऑनलाइन फार्म : एक अध्ययन डॉ. लता चन्दोला, एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा–1	30
8.	हर स्त्री में एक मीराँ रहती है डॉ. सुनीता अवस्थी, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, राजकीय सनातन धर्म महाविद्यालय, ब्यावर, अजमेर	34
9.	Harmonious Relation between Classical music and Painting Dipto Narayan Chattopadhyay, Research scholar Raja Mansingh Tomar University of Music and Arts, Gwalior.	39
10.	कोरोना काल में भारतीय संस्कृति और कला का कवच जूही शुक्ला, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, चित्रकला विभाग, प्रयाग महिला विद्यापीठ, डिग्री कालेज, प्रयागराज	44
11.	वीर दुर्गादास राठौर प्रोफेसर सूर्य प्रसाद दीक्षित, विभागध्यक्ष, लखनऊ, विश्वविद्यालय, लखनऊ	49
12.	कोरोना कालीन मीडिया विमर्श मोहित शुक्ला, शोध छात्र, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ	51

ISSN : 2582-1792 (P) | SHODH SAMAGAM | Webinar Special Issue for 13-14 February 2021

वर्तमान परिवेश में गुरु नानक देव की समग्र तथा व्यवहारिक दृष्टि

डॉ. प्रिया शर्मा,
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला

परिवेश में देश और काल दोनों सम्मिलित होते हैं। देशगत परिवेश में गाँव, नगर, प्रांत, देश या विश्व का वातावरण समस्त भौगोलिक और सामाजिक विशेषत्व के साथ सम्मिलित होता है। कालगत परिवेश में किसी व्यक्ति विशेष के जीवन को अतीत या वर्तमान से संदर्भ लेते हुए अभिव्यक्त किया जाता है। मध्ययुगीन भक्तिकाल का साहित्य इतनी दीनता, आत्म–निषेध और आध्यात्मिक सुख प्राप्ति की लालसा से भरा हुआ है कि उसमें अपने परिवेश की विसंगतियों और क्रूरताओं के प्रति कवि की प्रतिक्रिया ढूंढ निकालना आसान नहीं है। पहला प्रश्न तो यही होता है कि इन भक्त कवियों में किस सीमा तक अपने चारों ओर के समाज में तेजी से घट रही घटनाओं के प्रति जागरूकता का भाव विद्यमान था। यदि कुछ था भी तो उनके प्रति उनकी प्रतिक्रया किस रूप में थी। 'कोउ नृप होई हमहिं का हानी' अथवा 'सन्तन कहा सीकरी सो काम। आवत जात पनहिया टूटें बिसरि गयो हरिनाम' के माध्यम से जो प्रतिक्रिया व्यक्त होती है, उसमें अपने चारों ओर के व्यापक परिवेश के प्रति सक्रिय जागरूकता की अपेक्षा उपेक्षा या निर्लिप्तता का भाव ही अधिक है।[1] वर्तमान युग में जीवन–मूल्यों और परंपरागत आदर्शों का विघटन हुआ है, परिवर्तित परिवेश में मानव का करोना जैसी भीषण महामारी में भीषण नरसंहार के पश्चात् मन में आक्रोश है, पीड़ा है और जीवन की कठोर यातनाओं को सहन करने का साहस भी है। आज मनुष्य का अस्तित्व खतरे में पड़ा है। महत्वपूर्ण बात यहहै कि बड़े–बड़े देश, कंपनियां विस्तारवादी सोच के कारण ध्वस्त हुई हैं, आर्थिक संकट गहराया है। सबको हरिनाम याद आ रहा है। ऐसे में मध्यकालीन लोकनेता गुरु नानक देव केवल भाषा, कवि अथवा धर्म की सीमा तक परिसीमित नहीं रहते बल्कि सामाजिक संदर्भ, सामाजिक संगति, सामाजिक उपयोगिता, सामाजिक क्रांतिकारिता की महनीय प्रतिबद्धताएं प्रदान करते हैं। राधाकृष्ण का कथन है कि प्रत्येक धर्म संस्थापक व्यक्तिगत, समाजगत तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुरूप ही अपने धार्मिक संदेश देता है। गुरु नानक देव भी अपने युग के समाज से संबंधित थे। उनकी वाणी समाज के लिए प्रेरणा और पथ स्वरूप बनी रहेगी। समय परिवर्तनशील है। जैसे–जैसे समय बदल रहा है, उसके साथ ही समाज, व्यवस्था, रिश्ते, संबंधों में बदलाव हो रहा है। यह बदलाव साहित्यिक समाज में भी दृष्टिगोचर हो रहा है। निरंतर हो रहे बदलाव के कारण मानव की सोच बदली है। कहा जाता है कि परिवार समाज की प्रथम ईकाई होता है परंतु आज मानव के पास कोसों दूर बैठे व्यक्ति से संपर्क साधने का समय है लेकिन अपने ही परिवार के सदस्यों से बात करने का समय नहीं। नानकवाणी में सामाजिक व पारिवारिक संबंधों का खंडन नहीं किया गया क्योंकि गुरु नानक गृहस्थ थे और सामाजिक संबंधों को स्वीकार करते थे :

> सो गिरही जो निग्रहु करै। जपु तपु संजमु भीखिआ करै।
> पुनं दान का करे सरीरु। सो गिरही गंगा का नीरु।।[3]

गुरु नानक देव के पास युगबोध और भावबोध, आस्था, संकल्प, संघर्ष और प्रगतिशीलता से समन्वित तथा गहरी व्यावहारिक दृष्टि रही है। आज की मायानगरी में हम कहते कुछ हैं, करते कुछ हैं परंतु गुरु नानक 'कथनी' और 'करनी' के विभेद को स्वीकार नहीं करते। जो कुछ कहा गया है, उसे किया भी जाना चाहिए। इस प्रकार व्यक्ति मात्र के लिए यह आवश्यक है कि वह जो कुछ कहे, उसे व्यवहार या आचरण में लाए। केवल कहने मात्र से किसी काम में सिद्धि या सफलता कदापि नहीं मिल सकती। विश्व मानवता को जगाने के लिए गुरु नानक देव ने देश–विदेश में यात्राएं की हैं जिनको 'उदासियां' नाम से जाना जाता है। 'उदासी' शब्द उदास से है जिसका भाव है उपराम, दुनिया से विरक्त। इसी प्रकार उदासी का भाव है उपरामता, विरक्तता, किनारा। तत्कालीन भारतीय समाज जो विनाश के कगार पर खड़ा था, उसे सुरक्षा प्रदान करने के लिए गुरु नानक ने